विश्व पृथ्वी दिवस

हमारी पृथ्वी : आइये इसे जानें, समझें और बचायें

❒ हरि कृष्ण आर्य

विद्यालयी छात्र-छात्राओं को पृथ्वी के बारे में स्वयं करके सीखने की विधि द्वारा जानकारी देने तथा पृथ्वी को अधिक सुरक्षित और समृद्ध बनाने के उद्देश्य से लेखक द्वारा प्रारम्भ की गई प्रोजेक्ट "Planet Earth-Our Home : Explore, Care and Share" देश-विदेश के सौ से भी अधिक विद्यालयों में चलाई जा रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट द्वारा इस प्रोजेक्ट का चयन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुतीकरण हेतु किया गया है।

अखिल ब्रह्माण्ड में आज तक किसी ऐसे दूसरे ग्रह का पता नहीं चल पाया है, जिस पर हमारी पृथ्वी के समान जीवन हो। पृथ्वी हमार घर है। मानव सहित समस्त जीवों पेड़-पौधों के लिए माँ की गोद जैसा अति आरामदायक और सुरक्षित स्थान। हमारी पृथ्वी असीम उत्तेजना एवं चौंका देने वाले स्थानों, घटनाओं और सम्पूर्ण रंग बिखेरने वाली विविधताओं से भरी पड़ी है। पर हमने इसके संसाधनों का अति दोहन किया है। इसके पर्यावरण को नष्ट किया है। यहाँ तक कि इसको कूड़ेदान जैसा इस्तेमाल किया है। हमने स्वयं को ''ब्रह्माण्ड का मालिक'' समझ कर जब चाहा वैसा किया और अब हम अपने ही द्वारा पैदा की हुई विभिन्न आपदाओं एवं महा-विपदाओं का सामना करने को मजबूर हैं। अब हम अपनी गलतियों को थोड़ा समझ पाए हैं और भूल सुधार की दिशा में कुछ कदम भी उठाए हैं। पर अभी इस दिशा में और बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। आने वाले कुछ दशकों में केवल यही निर्णय नहीं होगा कि हम अपनी धरती माँ को कितना प्यार करते हैं, यह भी तय होगा कि मानव प्रजाति पृथ्वी पर बची रहेगी या नहीं।

आज से लगभग दस-पंद्रह वर्ष पहले, जब धरती पर डायनासोर घूमते थे तब पृथ्वी एक ही बड़े महाद्वीप के रूप में थी, जिसे पैन्जियां कहते हैं। आज की पृथ्वी इस पैन्जिया के टुकड़ों का समूह है जो भिन्न-भिन्न महाद्वीपों और द्वीपों में बँटा है। पृथ्वी केवल भूगर्भीय परिवर्तनों से ही नहीं गुजरी है बल्कि जैव एवं अजैव संसार में भी सतत परिबर्तन होते रहे हैं। आज डायनासोर विलुप्त हो चुके हैं, साथ ही साथ लाखों जीव-जन्तु एवं वनस्पति प्रजातियों का भी विलुप्तिकरण हुआ है। पर इन परिवर्तनों के बावजूद आज बची हुई विविधता ही मानव लिए इस गृह को अनूठा बनाती है। पृथ्वी पर किसी विशेष प्रजाति की प्रधानता या प्रभुत्व की अवधारणा का प्रश्न ही नहीं उठता है। इस गृह के 71 प्रतिशत भाग पर जल एवं 29 प्रतिशत भाग पर भूमि के पारस्परिक संतुलन से एक ऐसे पर्यावरण का जन्म हुआ है जो बहुत ही संतुलित अवस्था में है। किन्तु जब कभी इस प्राकृतिक संतुलन को भंग करने का प्रयास होता है तो इस संतुलन को बिगाड़ने का कारण बन जाता है।

पृथ्वी सूर्य से लगभग 150 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और सौर मंडल में दूरी के हिसाब से सूर्य से तीसरे गृह के स्थान पर है। यह अपने पथ पर 365.256 दिन में सूर्य का एक परिभ्रमण करती है तथा इसके साथ-साथ प्रत्येक 23.9345 घंटे में अपनी धुरी पर भी एक पूरा चक्कर लगा लेती है। पृथ्वी का व्यास 12756 किलोमीटर है। हमें पृथ्वी पर चारों ओर वायुमंडल भी मिला है जिसके कारण पृथ्वी पर जीवन संभव हुआ है। इस वायुमंडल में ऑक्सीजन की उपस्थिति इस गृह पर जीवन को बनाये रखने में सहायक है। पृथ्वी के भीतर पिघले हुए निकल-लौह क्रोड का परिचक्रण पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का निर्माण करता है। चुम्बकीय क्षेत्र तथा वायुमंडल, दोनों मिलकर सूर्य तथा अन्य तारों से आने वाले हानिकारक विकिरण एवं कॉस्मिक किरणों से हमें बचाते हैं। वायुमंडल अन्तरिक्ष से आती हुई उल्काओं से भी हमारा बचाव करता है, क्योंकि उनमें से अधिकांश पृथ्वी पर गिरने से पहले ही वायुमंडल के घर्षण से जल कर नष्ट हो जाते हैं। विश्व के वैज्ञानिकों ने पृथ्वी का अध्ययन कर इसके भौतिक-रासायनिक अवयवों, जीवन की विविधता एवं जैव-भूगर्भीय-भौतिकीय परिवर्तनों के बारे में काफी जानकारियां जुटाई है।

पृथ्वी खो रही है अपना प्राकृतिक स्वरूप

आज हमारी पृथ्वी अपना प्राकृतिक स्वरुप खोती जा रही है। जहाँ देखो वहाँ कूड़े के ढेर व बेतरतीब फैले कचरे ने इसके सौंदर्य को नष्ट कर दिया है। विश्व में बढ़ती जनसंख्या तथा औद्योगीकरण एवं शहरीकरण में तेजी से वृद्धि के साथ-साथ ठोस अपशिष्ट पदार्थों द्वारा उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भी विकराल होती जा रही है। ठोस अपशिष्ट पदार्थों के समुचित निपटान के लिए पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। ठोस अपशिष्ट पदार्थों की मात्रा में लगातार वृद्धि के कारण उत्पन्न उनके निपटान की समस्या केवल औद्योगिक स्तर पर विकसित देशों के लिए ही नहीं वरन कई विकासशील देशों के लिए भी सिरदर्द बन गई है। उदाहरण के लिए अकेले न्यूयॉर्क में प्रतिदिन 2500 ट्रक के भार के बराबर ठोस अपशिष्ट पदार्थों का उत्पादन होता है। यहां प्रतिदिन 25,000 टन ठोस कचरा निकलता है। इस समय विश्व में प्रतिवर्ष प्लास्टिक का उत्पादन 10 करोड़ टन के लगभग है और इसमें प्रतिवर्ष उसे 4 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। भारत में भी प्लास्टिक का उत्पादन व उपयोग बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। औसतन प्रत्येक भारतीय के पास प्रतिवर्ष पाँच किलो प्लास्टिक अपशिष्ट पदार्थ इकट्ठा हो जाता है। इसका अधिकांश भाग कूड़े के ढेर पर और इधर-उधर बिखर कर पर्यावरण प्रदूषण फैलाता है। एक अनुमान के अनुसार केवल अमेरिका में ही एक करोड़ किलोग्राम प्लास्टिक प्रत्येक वर्ष में कूड़ेदानों में पहुँचता है। इटली में प्लास्टिक के थैलों की सालाना खपत एक खरब है। इटली आज सर्वाधिक प्लास्टिक उत्पादक देशों में से एक है।

पर्यावरण में विष घोल रहा पॉलीथीन

आधुनिक युग में सुविधाओं के विस्तार ने सबसे अधिक पर्यावरण को ही चोट पहुँचाई। लोगों की सुविधा के लिए आविष्कृत पॉलीथीन आज मानव जाति के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बन गया है। इसका जैविक अपघटन न होने के

कारण भूमि पर इसकी मात्रा निरंतर बढ़ती जा रही है। यह भूमि की उर्वरक क्षमता को खत्म कर रहा है। यह भूजल स्तर को घटा रहा है और उसे विषैला बना रहा है। पॉलीथीन के जलाने से निकलने वाला धुआँ ओजोन परत को भी नुकसान पहुँचा रहा है जो ग्लोबल वार्मिंग का बड़ा कारण है। पॉलीथीन कचरे से देश में प्रतिवर्ष लाखों पशु-पक्षी मौत का ग्रास बन रहे हैं। लोगों में तरह-तरह की बीमारियां फैल रही है, जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट हो रही है तथा भूगर्भीय जलस्रोत दूषित हो रहा हैं। प्लास्टिक के ज्यादा संपर्क में रहने से लोगों के खून में थेलेट्स की मात्रा बढ़ जाती है। इससे गर्भवती महिलाओं के गर्भ में पल रहे शिशु का विकास रुक जाता है और प्रजनन अंगों को नुकसान पहुँचता है। प्लास्टिक उत्पादों में प्रयोग होने वाला बिस्फेनॉल रसायन शरीर में डायबिटीज व लिवर एंजाइम को असामान्य कर देता है। पॉलीथीन कचरा जलाने से कार्बन डाईऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड एवं डाईऑक्सीन्स जैसी विषैली गैसें उत्सर्जित होती हैं। इनसे साँस, त्वचा आदि की बीमारियां होने की आशंका बढ़ जाती है। पॉलीथीन थैलियों का अधिक इस्तेमाल करके हम न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहे है, बल्कि गंभीर रोगों को भी न्यौता दे रहे हैं। इन्हें यूं ही फेंक देने से नालियां अवरुद्ध हो जाती हैं। इससे गंदा पानी सड़कों पर फैलकर मच्छरों का घर बनता है। इस प्रकार यह हैजा, टाइफाइड, डायरिया व हेपेटाइटिस-बी जैसी गंभीर बीमारियों का भी कारण बनता है।

भारत में प्रतिवर्ष लगभग 500 मीट्रिक टन पॉलीथीन का निर्माण होता है, लेकिन एक प्रतिशत से भी कम की रीसाइक्लिंग हो पाती है। अनुमान है कि भोजन के धोखे में इन्हें खा लेने के कारण प्रतिवर्ष 1,00,000 समुद्री जीवों की मौत हो जाती है। इनको निगलने से मवेशियों की मौत की खबरें तो आपने खूब पढ़ी-सुनी होगी। जमीन में गाड़ देने पर पॉलीथीन अपने अवयवों में टूटने में 1,000 साल से भी अधिक समय ले लेता है। पूर्ण रूप से तो इसका प्राकृतिक अपघटन कभी होता ही नहीं है। यहाँ तक कि जिन पॉलीथीन के थैलों पर बायोडिग्रेडेबल लिखा होता है, वे भी पूर्णतया इकोफ्रेंडली नहीं होते है।

ग्लोबल वार्मिंग

ग्लोबल वार्मिंग यानी वैश्विक तापमान आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि धरती पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी त्रस्त है। ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए दुनियाभर में प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन समस्या कम होने के बजाय साल-दर-साल बढ़ती ही जा रही है। चूंकि यह एक शुरुआत भर है, इसलिए अगर हम अभी से नहीं संभले तो भविष्य और भी भयावह हो सकता है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, ग्लोबल वार्मिंग धरती के वातावरण के तापमान में निरंतर हो रही बढ़ोतरी है। हमारी धरती प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से उष्मा प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमंडल से गुजरती हुई पृथ्वी की सतह से टकराती हैं और वहीं फिर वहीं से परावर्तित होकर पुनः लौट जाती हैं। पृथ्वी का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है जिनमें कुछ ग्रीन हाउस गैसें भी शामिल हैं। इनमें से अधिकांश पृथ्वी के ऊपर एक प्रकार से एक प्राकृतिक आवरण बना लेती हैं। यह आवरण लौटती किरणों के हिस्से को रोक लेता है और इस प्रकार धरती के वातावरण को गर्म बनाए रखता है। जीवधारियों को जीवित रहने के लिए कम से कम 16 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रीन हाउस गैसों में बढ़ोतरी होने पर यह आवरण और भी सघन या मोटा हो जाता है। ऐसे में यह आवरण सूर्य की अधिक किरणों को रोकने लगता है और फिर यहीं से शुरु हो जाते हैं ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव।

ग्लोबल वार्मिंग के लिये सबसे ज्यादा जिम्मेदार तो मानव और उसकी गतिविधियां ही हैं। अपने आप को इस धरती का सबसे बुद्धिमान प्राणी समझने वाला मनुष्य अनजाने में या जानबूझकर अपने ही रहवास को खत्म करने पर तुला हुआ है। मानव जनित इन गतिविधियों से कार्बन डाईऑक्साईड, मिथेन, नाइट्रोजन ऑक्साइड इत्यादि ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है जिससे इन गैसों का आवरण सघन होता जा रहा है। यही आवरण सूर्य की परावर्तित किरणों को रोक रहा है जिससे धरती के तापमान में वृद्धि हो रही है। वाहनों, हवाई जहाजों, बिजली बनाने वाले संयंत्रों, उद्योगों इत्यादि से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन की वजह से कार्बन डाईऑक्साइड में बढ़ोतरी हो रही है। जंगलों का बड़ी संख्या में हो रहा विनाश इसकी दूसरी वजह है। जंगल कार्बन-डाइऑक्साइड की मात्रा को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करते हैं, लेकिन इनकी बेतहाशा कटाई से यह प्राकृतिक नियंत्रक भी हमारे हाथ से छूटता जा रहा है।

इसकी अन्य वजह सीएफसी (क्लोरोफ्लोरो कार्बंस) हैं जो रेफ्रीजरेटर्स, अग्निशामक यंत्रों इत्यादि में इस्तेमाल की जाती है। यह धरती के ऊपर बने प्राकृतिक आवरण ओजोन को नष्ट करने का काम करती है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली घातक पराबैंगनी (अल्ट्रावॉयलेट) किरणों को धरती पर आने से रोकती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस ओजोन परत में एक बड़ा छिद्र हो चुका है जिससे पराबैंगनी किरणे सीधे धरती पर पहुँच रही हैं और इस तरह से उसे लगातार गर्म बना रही हैं। यह बढ़ते तापमान का ही परिणाम है कि ध्रुवों पर सदियों से जमी बर्फ भी पिघलने लगी है। विकसित हो या अविकसित देश, हर जगह बिजली की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। बिजली के उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल बड़ी मात्रा में करना पड़ता है। जीवाश्म ईंधन के जलने पर कार्बन डाईऑक्साइड पैदा होती है जो ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव को बढ़ा देती है। इसका नतीजा ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने आता है।

पिछले दस सालों में धरती के औसत तापमान में 0.3 से 0.6 डिग्री सेल्सियश की बढ़ोतरी हुई है। आशंका यह जताई जा रही है कि आने वाले समय में ग्लोबल वार्मिंग में और बढ़ोतरी ही होगी। ग्लोबल वार्मिंग से ग्लैशियरों पर जमा बर्फ पिघलने लगेगी। ग्लैशियरों की बर्फ के पिघलने से समुद्रों में पानी की मात्रा बढ़ जाएगी जिससे साल-दर-साल उनकी सतह में भी बढ़ोतरी होती जाएगी। समुद्रों की सतह बढ़ने से प्राकृतिक तटों का कटाव शुरु हो जाएगा जिससे एक बड़ा हिस्सा डूब जाएगा। इस प्रकार तटीय इलाकों में रहने वाले अधिकांश लोग बेघर हो जाएंगे। गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और येलो फीवर जैसे संक्रामक रोग बढ़ेंगे। वह समय भी जल्दी ही आ सकता है जब हममें से अधिकांश को पीने के लिए स्वच्छ जल, खाने को ताजा भोजन और श्वास लेने के लिए शुद्ध हवा भी नसीब नहीं हो। ग्लोबल वार्मिंग का पशु-पक्षियों और वनस्पतियों पर भी गहरा असर पड़ेगा। माना जा रहा है कि गर्मी बढ़ने के साथ ही पशु-पक्षी और वनस्पतियां धीरे-धीरे ऊपरी और पहाड़ी

इलाकों की ओर प्रस्थान करेंगे, लेकिन इस प्रक्रिया में कुछ अपना अस्तित्व ही खो देंगे।

मौसम चक्र हुआ अनियमित

आज धरती पर हो रहे जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार कोई और नहीं बल्कि समस्त मानव जाति है। सुविधाभोगी जीवन शैली ने सामाजिक सरोकारों को पीछे छोड़ दिया है। जैसे-जैसे हम विकास के सोपान चढ़ रहे हैं। वैसे-वैसे पृथ्वी पर नए-नए खतरे उत्पन्न हो रहे हैं। दिन-प्रतिदिन घटती हरियाली व बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण रोज नई समस्याओं को जन्म दे रहा है। इस कारण प्रकृति का मौसम चक्र भी अनियमित हो गया है। अब सर्दी, गर्मी और वर्षा का कोई निश्चित समय नहीं रह गया। हर वर्ष तापमान में हो रही वृद्धि से बारिश की मात्रा कम हो रही है। इस कारण भू-जल स्तर में भारी कमी आई है। निरंतर बढ़ रहे वायु व जल प्रदूषण तथा कृषि में रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के अँधा-धुँध उपयोग ने भी धरती को उजाड़ने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रखी है।

कैसे बचे अपनी वसुंधरा

यदि समय रहते कोई उपाय नहीं किए तो ये समस्याएं इतना विकराल रूप धारण कर लेंगी कि पृथ्वी पर मानव जाति का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाएगा। इसलिए सभी को एकजुट होकर पृथ्वी को बचाने के उपाय करने होंगे। इसमें प्रशासन, सामाजिक संगठन, शैक्षणिक संस्थाओं सहित सभी को अपनी भागीदारी निभानी होगी। ऐसे अनेक तरीके हैं जिसे हम अकेले और सामूहिक रूप से अपनाकर पृथ्वी को बचाने में योगदान दे सकते हैं।

हम सभी जो कि इस स्वच्छ श्यामला धरा के रहवासी हैं, का यह दायित्व है कि दुनिया में कदम रखने से लेकर आखिरी साँस तक हम पर प्यार लुटाने वाली इस धरा को बचाए रखने के लिए हम जो भी कर सकें करें। यह तभी संभव होगा जब वह हरी-भरी तथा प्रदूषण से मुक्त रहे, इसकी जैव विविधता बनी रहे, वन और वन्य जीव संरक्षित रहे, इसके प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन न हो। पृथ्वी दिवस मात्र एक दिन मनाने का नहीं है। आप हर दिन को पृथ्वी दिवस मानें और आज से ही नहीं अभी से ही शुरु करें इसे बचाने के प्रयास।

78, गुरुनानक नगर, स्ट्रीट नं.13,
नई आबादी, N.M.P.G. कॉलेज के पास,
हनुमानगढ़ टाउन-335513
मो. 9414202796

विद्या ददाति विनयम्

विनम्रता-विवेक विद्या सिखाती है

❒ महेशचन्द्र श्रीमाली

जल का प्रवाह नीचे की ओर होता है, तभी वह विशाल भवन की ऊपरी मंजिल पर पहुँचने में कामयाब होता है। वृक्ष फलों से लदा होने पर डालियाँ नीचे की ओर झुक जाती है। ज्ञानी पुरुष सदैव विनम्र होते हैं, और वे महापुरुष के नाम से जाने माने जाते हैं। इस सम्बन्ध में कहा भी गया है कि-'विद्या ददाति विनयम्' अर्थात् विद्या विनम्रता प्रदान करती है। शिक्षित व्यक्ति के व्यक्तित्व में विनम्रता आभूषण होती है। विनम्रता के फलस्वरूप हमारे जीवन में आने वाली सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। अपने शत्रु से हम यदि वह व्यवहार करें, जो हम उससे चाहते हैं, अर्थात् विनम्रता, आदरपूर्वक व्यवहार तो निश्चय ही शत्रुता-मित्रता में बदल जाती है। जब हनुमान जी सीता की खोज में लंका जा रहे थे, तब सुरसा नामक राक्षसी उन्हें देखकर बोली 'आज सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा' तब हनुमान जी ने यह वचन सुनकर कहा 'रामु काजु करि फिर मैं आवों सीता कर सुधि प्रभुहि सुनावों, तब-तब बदन पैठहऊ आई; सत्य कहंऊ मोहे जान दे माई।।' अर्थात् 'हे माता मैं राम के कार्य को पूर्ण करके पुनः लौट आऊं' सीता का पता राम को बता दूं तब मैं सत्य कहता हूँ, वापस लौट के आउंगा तब मुझे आप खाना ! हे माता अभी मुझे जाने दें। ऐसे विनम्र शब्दों को सुनकर भी जब सुरसा ने हनुमान जी का भक्षण करने हेतु अपने बदन को बढ़ाया, तब हनुमान जी ने लघु रूप बनाकर उसके शरीर में प्रवेश कर गये और पुनः बाहर आकर सिर झुकाकर विदा मांगने लगे। तब सुरसा ने आशीर्वाद दिया और कहा कि-

राम काजु सब करि हहू तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आशीष देह गई सो हरषि चलेउ हनुमान।।
राम के काज को पूर्ण करो हे, बल, बुद्धि, निधान।।

कहने का तात्पर्य यह है कि विनम्रता लघुता के फलस्वरूप शत्रु पर हनुमानजी ने विजय प्राप्त की और उसके सामने लघुता प्रकट करने से उससे आशीर्वाद भी प्राप्त किया। अतः इससे स्पष्ट होता है कि नम्रता लघुता को प्रभुता प्राप्त होने पर भी नहीं भूलना चाहिये और नम्रतापूर्वक व्यवहार हमें करना चाहिये। विद्या अहम पालने के लिये नहीं है अपितु विनम्र बनने के लिये है। विद्या का स्वरूप एवं आभूषण विनम्रता है। सच्चे मायने में शिक्षित वही कहलाता है, जिसके जीवन में विनम्रता है। ऊँची-ऊँची डिग्रियां हमें रोजगार प्रदान कर सकती है परन्तु जीवन की सफलता नहीं, आनन्द नहीं। जबकि विनम्रता सरलता व्यक्ति को सभी कुछ दे सकती है।

विद्या से विवेक उत्पन्न होता है, जीवन के अच्छे एवं बुरे कार्य की समझ उत्पन्न होती है। जिससे परिवार, समाज, राष्ट्र में अच्छे नागरिकों का निर्माण होता है। विवेक बुद्धि की आवश्यकता जीवन की पगडंडी पर चलने के लिए परमावश्यक है। अच्छी व बुरी बुद्धि प्रत्येक व्यक्ति हृदय में निवास करती है, तथा विवेक का उपयोग कर हमें निर्णय लेना होता है अर्थात् समझ पैदा करनी पड़ती है। हमारी निर्णय शक्ति सकारात्मक, सर्वजनहिताय हो तो चहुं ओर सफलता व सुन्दर सामाजिक समरसता के निर्माण के साथ दशा व दिशा मिलती है। वहीं हम विवेक का उपयोग कर नकारात्मक व कुमति का उपयोग करते हैं तो इसका प्रभाव समाज एवं राष्ट्र पर पड़ेगा। विद्या हमें सदमार्ग की ओर आकर्षित करती है। महाकवि तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में कहा है कि सुमति, कुमति, सब के उर रही, नाथ पुराण निगम अस कहही। जहाँ सुमति तहं संपत्ति नाना। जहां कुमति तहां विपत्ति निदाना। अर्थात् अच्छी व बुरी मति सभी के पास है, किन्तु जहां अच्छी मति है वहां समृद्धि है तथा जहां कुमति है वहां अनेकों विपत्तियां है। अच्छी बुद्धि से हम विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाजसेवा सहित जनकल्याणकारी कार्य पूरे कर सकते हैं। वहीं बुरी मति से हम हमारा ही नुकसान कर बैठते हैं।

विनम्रता और विवेक विद्या से प्राप्त होता है, ये विद्या के आभूषण हैं जो आगे चलकर चारित्रिक विकास की दिशा तय करते हैं, विद्यार्थी जीवन से चारित्रिक सुदृढ़ता के सुसंस्कारों का सिंचन होने पर देश को सु-संस्कृत नागरिकों की प्राप्ति होती है। आज का बालक कल का राष्ट्र निर्माता है। अतः चारित्रिक बल की वृद्धि वर्तमान समय की प्रासंगिकता है। आइये हम शुरूआत करें विनम्र बनें, नेक बनें, विवेक चुनें और आगे बढ़ें।

-3 थ 8, प्रभात नगर हिरण मगरी, सेक्टर-5, उदयपुर
मो. 9414851013